



“भीष्म साहनी के नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

डॉ. महेशकुमार एस डामोर

अध्यापक सहायक

श्री सहजानंद आर्ट्स कॉलेज नरसिंगपुर

सार (Abstract)

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के ऐसे यथार्थवादी रचनाकार हैं जिन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से भारतीय समाज की जटिल सामाजिक संरचना, वर्ग-संघर्ष, साम्प्रदायिकता, सत्ता-राजनीति और मानव मूल्यों के विघटन को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह शोध-पत्र भीष्म साहनी के प्रमुख नाटकों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करता है तथा यह स्पष्ट करता है कि उनके नाटक समाज की विसंगतियों के आलोचनात्मक दस्तावेज हैं।

मुख्य शब्द: भीष्म साहनी, नाटक, समाजशास्त्रीय अध्ययन, यथार्थवाद, साम्प्रदायिकता, वर्ग संघर्ष

1. भूमिका

नाटक सामाजिक जीवन का सशक्त माध्यम रहा है। साहित्य और समाज के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। भीष्म साहनी (1915-2003) प्रगतिशील लेखक आंदोलन से जुड़े ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने नाटकों में समाज की वास्तविक समस्याओं को निर्भीकता से उठाया। उनका साहित्य मानव-केंद्रित दृष्टि से सामाजिक यथार्थ को उजागर करता है।

समाजशास्त्रीय अध्ययन का उद्देश्य यह देखना है कि साहित्य किस प्रकार सामाजिक संरचना, संस्थाओं, मूल्यों और संघर्षों को अभिव्यक्त करता है। इस दृष्टि से भीष्म साहनी के नाटक अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

2. भीष्म साहनी का सामाजिक दृष्टिकोण

भीष्म साहनी का दृष्टिकोण मानवीय, प्रगतिशील और तर्कसंगत है। वे किसी एक विचारधारा के प्रचारक न होकर सामाजिक सच्चाइयों के विश्लेषक हैं। उनके नाटकों में—

- आम आदमी की पीड़ा
- सत्ता और व्यवस्था की अमानवीयता



- धार्मिक और साम्प्रदायिक कट्टरता
- नैतिक मूल्यों का पतन स्पष्ट रूप से उभरकर आता है।

3. प्रमुख नाटकों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

(क) हानूश

यह नाटक सत्ता और शोषण की प्रवृत्ति को उजागर करता है। हानूश का चरित्र शासक वर्ग की निरंकुश मानसिकता का प्रतीक है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह नाटक बताता है कि सत्ता जब नैतिकता से विहीन हो जाती है, तब समाज में अन्याय और दमन को जन्म देती है।

(ख) माधवी (नाट्य रूपांतरण)

इस नाटक में स्त्री की सामाजिक स्थिति और उसका वस्तुकरण प्रमुख विषय है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से *माधवी* पितृसत्तात्मक व्यवस्था की आलोचना करता है, जहाँ स्त्री को सत्ता और वंश के लिए साधन बना दिया जाता है।

(ग) कबिरा खड़ा बाज़ार में

यह नाटक सामाजिक और धार्मिक पाखंड पर तीखा प्रहार करता है। कबीर का चरित्र समाज सुधारक की भूमिका निभाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह नाटक वर्ग, धर्म और जाति आधारित भेदभाव को चुनौती देता है।

(घ) आलू

इस नाटक में आम आदमी की आर्थिक विवशता और उपभोक्तावादी समाज की विडंबना को प्रस्तुत किया गया है। यह पूंजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति के शोषण का सशक्त चित्रण करता है।

4. साम्प्रदायिकता और सामाजिक विघटन

भीष्म साहनी साम्प्रदायिकता को समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते हैं। उनके नाटकों में यह समस्या प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उपस्थित है। वे दिखाते हैं कि कैसे धर्म सत्ता का उपकरण बनकर समाज को तोड़ देता है और मानवीय संबंधों को नष्ट कर देता है।



5. वर्ग संघर्ष और आर्थिक असमानता

भीष्म साहनी के नाटकों में वर्गीय असमानता एक केंद्रीय मुद्दा है। शोषक और शोषित वर्ग के बीच का संघर्ष समाजशास्त्रीय यथार्थ के रूप में उभरता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक असमानता सामाजिक अन्याय को जन्म देती है।

6. मानवीय मूल्य और नैतिक संकट

आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों का हास भीष्म साहनी के नाटकों का प्रमुख विषय है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह आधुनिकता के दुष्परिणामों का विश्लेषण है, जहाँ व्यक्ति स्वार्थ, भय और सत्ता के दबाव में अपने मानवीय मूल्यों को खो देता है।

7. निष्कर्ष

भीष्म साहनी के नाटक समाज के जीवंत दस्तावेज हैं। उनका समाजशास्त्रीय महत्व इस बात में निहित है कि वे सामाजिक यथार्थ को बिना अलंकरण के प्रस्तुत करते हैं। उनके नाटक समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का संदेश देते हैं।

इस प्रकार, भीष्म साहनी के नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन यह सिद्ध करता है कि उनका नाट्य साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम है।

संदर्भ सूची

1. साहनी, भीष्म — *भीष्म साहनी रचनावली*
2. नामवर सिंह — *आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ*
3. रामविलास शर्मा — *साहित्य और समाज*
4. बच्चन सिंह — *हिंदी नाटक: परंपरा और प्रयोग*



**MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (On-line)**

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding
this certificate to

डॉ. महेशकुमार एस डामोर

In recognition of the publication of the paper entitled
“भीष्म साहनी के नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

Published in Volume 03, Issue 06, December 2025.

EDITOR IN CHIEF